अभ्यास : प्रश्न तथा उनके उत्तर

1. आपके विचार से महिलाओं के बारे में यह प्रचलित धारणा है कि पुरुषों के समान कार्य नहीं कर सकती है, आपके विचार से यह महिलाओं के अधिकार को कैसे प्रभावित करता है।

उत्तर–महिलाओं के बारे में यह प्रचलित धारणा कि वे पुरुषों के समान कार्य नहीं कर सकती है, की वजह से महिलाओं के अधिकतर प्रभावित होते हैं। लोगों की इस सोच की वजह से तो पहले लड़कियों की पढ़ाई में ही दो भेद होता है। लड़कियों को अधिक पढ़ाया-लिखाया नहीं जाता क्योंकि लड़कियों को तो बड़ा होकर दूसरों के घर को संभालना है और चूल्हा ही फूँकना है तो फिर ज्यादा पढ़ने की क्या जरूरत है। अगर लड़की पढ़ने में अच्छी है और उसमें योग्यता है कि वे कुछ कर दिखाए। फिर उसे पढ़ाई नहीं करने दिया जाता है और उन्हें शादी के लिए प्रेरित किया जाता है। अगर कोई लड़की तकनीकी क्षेत्र में जाना चाहे, तकनीकी क्षेत्र से जुड़े किसी विषय की पढ़ाई करना चाहें या फिर सेना में भर्ती होना चाहे तो ऐसा नहीं करने दिया जाता क्योंकि लोगों के हिसाब से तो ये सारे कार्य पुरुष ही कर सकते हैं महिलाएँ नहीं।

लोगों की इसी सोच की वजह से अगर कोई महिला नौकरी करती है, तो उसे अपने पदोन्नति के लिए पुरुषों से कहीं ज्यादा मेहनत करनी पड़ती है और खुद को साबित करना पड़ता है क्योंकि आज भी महिलाओं को पुरुषों से कमतर माना जाता है। किसी भी जगह पर महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों पर पहले ध्यान दिया जाता है। अगर कोई महिला कुछ अलग करना चाहती है तो उसके लिए उस काम को करने से कहीं ज्यादा मुश्किल होता है लोगों को ये यकीन दिलाना की वह भी ये काम कर सकती हैं और उसे भी मौका दिया जाना चाहिए। आज भी बहुत सारे क्षेत्र हैं जहाँ महिलाओं को लोगों की इस सोच का शिकार होना पड़ता है, जैसे—गाँव में पुरुष और महिलाएँ दोनों खेतों पर काम करते हैं, पर महिलाओं को दी जाने वाली मजदूरी पुरुषों को दी जाने वाली

मजदूरी से कम होती है। इसलिए लोगों को अपनी सोच बदलनी चाहिए और महिलाओं और पुरुषों को समानता की नजर से देखना चाहिए।

2. महिला आंदोलन द्वारा अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए किन्हीं दो प्रयासों का उल्लेख करें।

उत्तर—महिला आंदोलन द्वारा अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए किए गए दो प्रयासों में 'दहेज के खिलाफ किया गया आंदोलन' और 'घरेलू हिंसा' के खिलाफ आंदोलन शामिल है।

दहेज की वजह से औरतों से मार-पीट करना, उन्हें जलाना एक आम बात रही है। दहेज की वजह से कितने औरतों ने अपनी जान गंवाई। इसके खिलाफ 1980 में औरतों के द्वारा एक जोरदार आंदोलन शुरू किया गया। इसमें महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। खासकर उन महिलाओं ने जिन्होंने दहेज की वजह से अपने बेटियों और बहनों को खोया था। इस आंदोलन के जरिए जगह-जगह नुक्कड़ नाटक किए और पीड़ित महिला व उनके परिवार वालों को कानूनी सलाह के साथ-साथ मानसिक बल भी दिया गया। महिलाओं ने कचहरी में अपनी माँगों को रखा। आंदोलन की वजह से दहेज समाज का एक बड़ा मुद्दा बन गया और समाचार पत्रों में इसके खिलाफ बहस हुई। जिसके परिणामस्वरूप दहेज कानून बना जिसके तहत वैसे लोगों को दंड दिया जा सके, जो इस प्रकार के अपराध में शामिल होते हैं।

घरेलू हिंसा जैसे—महिलाओं के साथ मार-पीट, गाली-गलौज और छोटी-छोटी बातों पर उन्हें प्रताड़ित करना एक आम बात हो गयी है। यह एक आम बात होने के साथ ही एक गंभीर समस्या भी है। घरेलू हिंसा के तहत महिलाओं को शारीरिक जाति के साथ ही मानसिक क्षति पहुँचाने की कोशिश भी की जाती है। इसके खिलाफ महिला समूह बहुत ही लंबे समय से संघर्ष करती आ रही है। उनके इस संघर्ष के फलस्वरूप 2006 में घरेलू हिंसा उत्पीड़न कानून पारित हुआ। जिसके तहत महिलाओं के ऊपर घर में हाने वाले शारीरिक और मानसिक हिंसा को रोका जाएगा।

3. समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार करने के लिए कौन-कौन से कदम उठाये जा सकते हैं ? उल्लेख करें।

उत्तर—समाज में महिलाओं की स्थिति में सुधार करने के लिए उनमें और पुरुषों में भेदभाव नहीं होना चाहिए। महिलाओं को भी अपने इच्छा अनुसार पढ़ाई करने की अपने पसंद के क्षेत्र में काम करने की छूट मिलनी चाहिए। काम करने से वे अपने पैरों पर खड़ी हो पाएँगी और आत्मनिर्भर बनेंगी। उन्हें किसी को ऊपर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा और उनमें आत्मविश्वास बढ़ेगा। महिलाओं को हर क्षेत्र में आगे आने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। उन्हें नौकरी में पुरुषों के समान अवसर मिलने चाहिए। उन्हें पोषण का बराबर अधिकार देना चाहिए।

4. किसी ऐसी महिला की कहानी लिखें, जिसने अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए विशेष प्रयास किया हो।

उत्तर—मेरे घर के पास में एक परिवार रहता था, जिसमें तीन बेटियाँ और दो बेटे थे। उनकी मम्मी गृहणी और पिताजी एक छोटा-सा ढाबा चलाते थे। पूरा परिवार मिल-जुलकर काम करता था। आर्थिक तंगी के कारण उनके परिवार वाले सिर्फ बेटों को पढ़ाते थे और बेटियों को नहीं पढ़ाते पर उनकी बेटियाँ पढ़ने में बहुत अच्छी थी, बेटों से भी ज्यादा। वे पूरी दिन घर का काम करती थीं और पापा की मदद भी करती थी तथा रात में अपनी पढ़ाई करती थी। इतनी तकलीफों के बावजूद भी उनलोगों ने अपनी पढ़ाई जारी रखी और सभी परीक्षाओं में अच्छे नम्बरों के साथ उत्तीर्ण हुई और आज वह एक दफ्तर में उच्च पद पर कार्यरत है।